Date – 20 August 2022

भारत को विकसित देश बनाने का संकल्प

- हाल ही में, अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण में, प्रधान मंत्री ने वर्ष 2047 तक पंच प्राण को पूरा करने का लक्ष्य रखा है (जब भारत की स्वतंत्रता 100 वर्ष की होगी)।
- पहला संकल्प अगले 25 वर्षों में भारत को एक विकसित देश बनाना है।
- वर्ष 2047 के लिए शेष प्रतिज्ञाएँ हैं – गुलामी के निशान को मिटाना, अपनी विरासत पर गर्व करना, विविधता में एकता सुनिश्चित करना और नागरिक कर्तव्यों का पालन करना।

विकसित देश:

- एक विकसित देश औद्योगीकृत होता है, जिसमें जीवन की उच्च गुणवत्ता, एक विकसित अर्थव्यवस्था और कम औद्योगीकृत राष्ट्रों की तुलना में उन्नत तकनीकी अवसंरचना होती है।
- जबकि विकासशील देश वे हैं जो औद्योगीकरण या पूर्व-औद्योगिक की प्रक्रिया में हैं और लगभग पूरी तरह से कृषि हैं।

आर्थिक विकास की मात्रा के मूल्यांकन के लिए सबसे सामान्य मानदंड हैं:

सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी):

- सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) या किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य।
- उच्च सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय (प्रति व्यक्ति अर्जित आय की राशि) वाले देश विकसित माने जाते हैं।

तृतीयक और चतुर्थ क्षेत्रों का प्रभुत्व:

- विकसित करने के लिए तृतीयक (मनोरंजन, वित्तीय और खुदरा विक्रेताओं जैसी सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनियां) और उद्योग के चौथे क्षेत्र (ज्ञान आधारित गतिविधियों जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और विकास, साथ ही परामर्श सेवाएं और शिक्षा) का प्रभुत्व रखने वाले देश, जैसा वर्णन किया गया है।

औद्योगिक अर्थव्यवस्था के बाद:

- इसके अलावा, विकसित देशों में आम तौर पर अधिक उन्नत औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएं होती हैं, जिसका अर्थ है कि सेवा क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र की तुलना में अधिक धन प्रदान करता है।

मानव विकास सूची:

- अन्य पैरामीटर बुनियादी ढांचे के मापन, सामान्य जीवन स्तर और मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) हैं।
- चूंकि एचडीआई जीवन प्रत्याशा और शिक्षा के सूचकांकों पर ध्यान केंद्रित करता है, और किसी देश में प्रति व्यक्ति शुद्ध धन या माल की सापेक्ष गुणवत्ता जैसे कारकों को ध्यान में नहीं रखता है।
- यही कारण है कि जी7 सदस्यों (कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, यूके, यूएस और ईयू) सहित कुछ सबसे उन्नत देश और अन्य एचडीआई में बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं करते हैं और स्विट्जरलैंड जैसे देश एचडीआई में उच्च हैं।

विकसित देश की परिभाषा:

- विकसित देश की कोई सर्वसम्मत परिभाषा नहीं है।
- संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन और विश्व आर्थिक मंच जैसी एजेंसियां विकसित और विकासशील देशों को वर्गीकृत करने के लिए अपने संकेतकों का उपयोग करती हैं।
- उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र देशों को निम्न, निम्न-मध्यम, उच्च-मध्यम और उच्च आय वाले देशों में वर्गीकृत करता है।
- यह वर्गीकरण किसी देश की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) पर आधारित है।
- **कम आय वाली अर्थव्यवस्था:** प्रति व्यक्ति $1,085 तक GNI
- **निम्न मध्यम आय:** $4,255 तक प्रति व्यक्ति जीएनआई
- **उच्च-मध्यम आय:** $13,205 GNI प्रति व्यक्ति
- **उच्च आय वाली अर्थव्यवस्था:** $13,205 से ऊपर प्रति व्यक्ति जीएनआई

संयुक्त राष्ट्र वर्गीकरण के विरोध में:

- संयुक्त राष्ट्र का वर्गीकरण बहुत सटीक नहीं है क्योंकि यह सीमित विश्लेषणात्मक मूल्य पर केंद्रित है। जिसके कारण केवल शीर्ष तीन देशों – यूएस, यूके और नॉर्वे – को विकसित देशों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- जबकि, लगभग 31 विकसित देश हैं, और शेष 17 (संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्थाओं को छोड़कर) विकासशील देशों के रूप में नामित हैं।
- चीन के मामले में, देश की प्रति व्यक्ति आय सोमालिया की तुलना में नॉर्वे के करीब है।
- चीन की प्रति व्यक्ति आय सोमालिया की 26 गुना है जबकि नॉर्वे की चीन की तुलना में लगभग सात गुना है, लेकिन फिर भी, इसे एक विकासशील देश का टैग मिला है।

- दूसरी ओर, यूक्रेन जैसे देश, जिनकी प्रति व्यक्ति जीएनआई $4,120 (चीन का एक तिहाई) है, को संक्रमण अर्थव्यवस्था (एक विकसित राष्ट्र के बजाय) के रूप में नामित किया गया है।

भारत की स्थिति:

- भारत वर्तमान में विकसित देशों के साथ-साथ कुछ विकासशील देशों से भी बहुत पीछे है।
- भारत सकल घरेलू उत्पाद के मामले में छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है लेकिन भारत प्रति व्यक्ति आय के मामले में बांग्लादेश से पीछे है।
- इसके अलावा, चीन की प्रति व्यक्ति आय भारत से 5 गुना और यूके की लगभग 33 गुना है।
- इस असमानता का मानचित्रण करने और भारत और अन्य देशों के अंकों के साथ इसकी तुलना करने के लिए, हम मानव विकास सूचकांक (HDI) को देखते हैं,
- भारत का प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा है।
- भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 1947 में लगभग 40 वर्ष से बढ़कर अब लगभग 70 वर्ष हो गई है।
- भारत ने प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक तीनों स्तरों पर शिक्षा के नामांकन में भी काफी प्रगति की है।
- भारत को एक विकसित देश कहलाने के लिए प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने की आवश्यकता है क्योंकि एक इकाई के रूप में लोग अधिक मायने रखते हैं।
- प्रति व्यक्ति आय में असमानता अक्सर विभिन्न देशों में जीवन की समग्र गुणवत्ता में परिलक्षित होती है।

भारत में प्रगति की कमी के क्षेत्र:

- विश्व बैंक द्वारा भारत पर 2018 की डायग्नोस्टिक रिपोर्ट के अनुसार, क्रय शक्ति समानता के मामले में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद, अधिकांश भारतीय अभी भी अन्य मध्यम आय वाले या धनी देशों के लोगों की तुलना में अपेक्षाकृत गरीब हैं।
- लगभग 10% भारतीयों का उपभोग स्तर वैश्विक मध्यम वर्ग के लिए प्रति दिन यूएस$10 (पीपीपी) खर्च की सामान्य रूप से उपयोग की जाने वाली सीमा से अधिक है।
- इसके अलावा, अन्य समूहों जैसे कि उपभोग के खाद्य हिस्से का सुझाव है कि भारत में अमीर परिवारों को भी अमीर देशों में गरीब परिवारों के स्तर तक पहुंचने के लिए अपनी कुल खपत का पर्याप्त विस्तार देखना चाहिए।

भारत 2047 तक विकसित देश का लक्ष्य हासिल करेगा:

- 2018 विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, 2047 तक, इसकी स्वतंत्रता की शताब्दी, इसके कम से कम आधे नागरिक वैश्विक मध्यम वर्ग के रैंक में शामिल हो सकते हैं।
- इसका मतलब यह होगा कि घरों में बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छ पानी, बेहतर स्वच्छता, विश्वसनीय बिजली, एक सुरक्षित वातावरण, किफायती आवास और अवकाश गतिविधियों पर खर्च करने के लिए पर्याप्त विवेकाधीन आय होगी।
- इसके अलावा, रिपोर्ट ने अत्यधिक गरीबी रेखा से ऊपर की आय के लिए पूर्व शर्त के साथ-साथ सार्वजनिक सेवा वितरण में उल्लेखनीय सुधार किया।

आजादी के बाद से भारत की उपलब्धियां:

सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी):

- भारत की जीडीपी वर्ष 1950-51 में 79 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर वर्ष 2021-22 में अनुमानित रूप से 147.36 लाख करोड़ रुपए हो गई।
- भारत की अर्थव्यवस्था वर्तमान में 17 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की है, जिसके वर्ष 2022 में विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की उम्मीद है।

विदेशी मुद्रा:

- भारत का विदेशी मुद्रा भंडार वर्ष 1950-51 में 911 करोड़ रुपये से बढ़कर वर्ष 2022 में 45,42,615 करोड़ रुपये हो गया है।
- भारत के पास अब विश्व का पांचवां सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार है।

खाद्य उत्पादन:

- भारत का खाद्यान्न उत्पादन 1950-51 में 8 मिलियन टन से बढ़कर अब 316.06 मिलियन टन हो गया है।

साक्षरता दर:

- साक्षरता दर भी 1951 में 3% से बढ़कर 78% हो गई है। महिला साक्षरता दर 8.9% से बढ़कर 70% से अधिक हो गई है।

स्वदीप कुमार

भारत पर फीफा प्रतिबंध

- हाल ही में फेडरेशन इंटरनेशनेल डी फुटबॉल एसोसिएशन (फीफा) ने देश के शीर्ष प्रशासनिक संगठन अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) को तीसरे पक्ष के अनुचित प्रभाव के लिए निलंबित कर दिया है।
- इस निलंबन ने देश से 11-30 अक्टूबर तक होने वाले फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप 2022 के आयोजन का अधिकार छीन लिया।

फीफा:

- फीफा या फेडरेशन इंटरनेशनेल डी फुटबॉल एसोसिएशन दुनिया में फुटबॉल का सर्वोच्च शासी निकाय है।
- यह एसोसिएशन फुटबॉल, फुटसल और बीच सॉकर का अंतरराष्ट्रीय शासी निकाय है।
- फीफा एक गैर-लाभकारी संगठन है।
- वर्ष 1904 में स्थापित, फीफा को बेल्जियम, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, स्पेन, स्वीडन और स्विट्जरलैंड के राष्ट्रीय संघों के बीच अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा की निगरानी के लिए लॉन्च किया गया था। फीफा में अब 211 सदस्य देश हैं।
- इसका मुख्यालय ज्यूरिख में है।

उद्देश्य:

- फीफा का प्राथमिक उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फुटबॉल का प्रसार करना और अखंडता और निष्पक्ष खेल को बढ़ावा देना है।
- यह 1930 में शुरू हुए पुरुष विश्व कप और 1991 में शुरू हुए महिला विश्व कप सहित अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों के संगठन और प्रचार के लिए जिम्मेदार है।
- यह अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति से संबद्ध है और अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल महासंघ के बोर्ड का सदस्य भी है, जो फुटबॉल के नियमों को स्थापित करने के लिए जिम्मेदार है।

फीफा से संबद्ध छह क्षेत्रीय संघ:

- एशियाई फुटबॉल परिसंघ (एएफसी) एशिया और ऑस्ट्रेलिया के लिए शासी निकाय है
- अफ्रीकी फुटबॉल परिसंघ (सीएएफ) में 56 सदस्य हैं,
- कन्फेडरेशन ऑफ नॉर्थ सेंट्रल अमेरिकन एंड कैरेबियन एसोसिएशन फुटबॉल (CONCAF) में 41 सदस्य हैं।
- द कन्फेडरेशन ऑफ़ सुदामेरिकाना डे फ़ुटबोल (CONMEBOL) एक 10-सदस्यीय दक्षिण अमेरिकी महासंघ है,
- ओशिनिया फुटबॉल महासंघ (ओएफसी) में न्यूजीलैंड सहित 14 सदस्य हैं,
- यूरोपीय फुटबॉल संघों का संघ (यूईएफए) 55 सदस्यों के साथ यूरोप के लिए शासी निकाय है।

अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ):

- अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) वह संगठन है जो भारत में फुटबॉल के खेल का प्रबंधन करता है।
- यह भारत की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के संचालन का प्रबंधन करता है और कई अन्य प्रतियोगिताओं और टीमों के अलावा, आई-लीग, भारत की प्रमुख घरेलू क्लब प्रतियोगिता को नियंत्रित करता है।
- एआईएफएफ की स्थापना वर्ष 1937 में हुई थी, और 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1948 में फीफा संबद्धता प्राप्त की।
- वर्तमान में इसका कार्यालय द्वारका, नई दिल्ली में है। भारत वर्ष 1954 में एशियाई फुटबॉल परिसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक था।

अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) पर फीफा द्वारा प्रतिबंध:

एआईएफएफ के अध्यक्ष द्वारा पद छोड़ने की अनिच्छा:

- अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल, जो फीफा परिषद के सदस्य भी हैं, ने देश में फुटबॉल के प्रमुख के रूप में पद छोड़ने से इनकार कर दिया है।
- उन्होंने एआईएफएफ संविधान के संबंध में अदालती मामले के साथ लंबे समय से चल रही महामारी का हवाला दिया।

तृतीय-पक्ष हस्तक्षेप:

- एआईएफएफ के कामकाज के बारे में बढ़ती चिंताओं के बावजूद, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हस्तक्षेप किया और पटेल को उनके पद से हटा दिया।
- इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने एआईएफएफ को चलाने के लिए प्रशासकों की एक समिति (सीओए) भी नियुक्त की।

- फीफा कानून के अनुसार, सदस्य संघों को अपने-अपने देशों में कानूनी और राजनीतिक हस्तक्षेप के अधीन नहीं होना चाहिए।
- तृतीय-पक्ष हस्तक्षेप एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें फीफा सदस्य संघ स्वतंत्र रहने में विफल रहता है, सह-चुना जाता है और अब संगठन पर उसका नियंत्रण नहीं है।
- भारत के मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने सीओए को तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप के मामले के रूप में एआईएफएफ का संचालन करने का निर्देश दिया था।

भारत के संदर्भ में निलंबन का अर्थ:

- इसका मतलब है कि भारत किसी भी अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल मैच में भाग नहीं लेगा और यह देश में प्रत्येक आयु वर्ग की सभी राष्ट्रीय स्तर की टीम और क्लब टीमों पर लागू होता है।
- निलंबन अंतरराष्ट्रीय तबादलों के साथ-साथ किसी भी विकासात्मक कार्यक्रम को प्रभावित करता है जिसमें एआईएफएफ के अधिकारी शामिल थे या इसमें भाग ले रहे थे।
- इसका मतलब भारत के बाहर फुटबॉल से संबंधित सभी गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध है।

प्रतिबंधों को उठाने के लिए भारत द्वारा संभावित उपाय:

- फीफा के अनुसार, एआईएफएफ पर से प्रतिबंध हटाने के लिए, उसे **निम्नलिखित निर्देशों का पालन करने की आवश्यकता है:**
- सीओए के अधिदेश को पूरी तरह से निरस्त करना होगा।
- एआईएफएफ प्रशासन को एक बार फिर से अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यों का स्वतंत्र प्रभारी बनाया जाना चाहिए।
- एआईएफएफ के नियमों और विनियमों को फीफा और एशियाई फुटबॉल परिसंघ (एएफसी) की नीतियों की शर्तों पर संशोधित करने की आवश्यकता है और इसके सदस्यों को केवल राज्य संघों के आधार पर मौजूदा एआईएफएफ सदस्यता संरचनाओं पर चुना जाता है।

स्वदीप कुमार

मुश्किल दौर में भारत-चीन के संबंध

संदर्भ क्या है ?

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने हाल ही में कहा कि चीन ने सीमा पर जो किया है, उसके बाद भारत और उसके संबंध अत्यंत मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यदि दोनों पड़ोसी देश हाथ नहीं मिलाते तो एशियाई शताब्दी नहीं आएगी।

भारत-चीन संबंधों में तनाव के बिंदु

सीमा पर तनाव

- भारत और चीन के बीच सीमा को वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) कहा जाता है अर्थात 1962 के युद्ध के बाद की वास्तविक स्थिति। भारत और चीन के बीच किसी एक क्षेत्र को लेकर सीमा विवाद

नहीं है बल्कि कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ चीन तो कहीं भारत को आपत्ति है। दोनों देशों के बीच करीब 3500 किमी लंबी सीमा है। 2017 में डोकलाम क्षेत्र में भारत-चीन के बीच तनाव हुआ।

- सिक्किम के पठारी क्षेत्र डोकलाम पर चीन अपना दावा करता है तो भूटान अपना दावा करता है। चीन में इस क्षेत्र को डोंगलोंग नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त चीन अरूणाचल प्रदेश के बड़े हिस्से पर अपना दावा करता है। अरुणाचल की 1126 कि.मी लम्बी सीमा चीन के साथ और 520 कि.मी. लम्बी म्यांमार के साथ मिलती है। चीन कहता है कि भारत से उसका सीमा विवाद सिर्फ 2000 किमी. है। इसमें ज्यादातर हिस्सा अरुणाचल प्रदेश में आता है।
- इन दोनों क्षेत्रों के अलावा एक मामला अक्साई चीन पर भारत-चीन का विवाद है। भारतीय पक्ष है कि ब्रिटिश भारत और तिब्बत ने 1914 में शिमला समझौते के तहत मैकमोहन को अंतराष्ट्रीय सीमा माना, जबकि चीन इसको नहीं मानता। 1962 के युद्ध के बाद हमारा बहुत बड़ा भाग चीन ने अपने हिस्से में मिला लिया, जिसे अक्साई चीन कहा जाता है। अक्साई चीन का कुल हिस्सा करीब 38 हजार वर्ग किमी. लम्बा है जो निर्जन पहाड़ी इलाका है|

ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध

- चीन ने तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर अपनी सबसे बड़ी पनबिजली परियोजना 'जम हाइडो पावर स्टेशन' का निर्माण किया है। इस परियोजना से भारत को यह चिंता है कि चीन जल आपूर्ति को बाधित कर सकता है या संघर्ष के समय इन बांधों से अतिरिक्त पानी छोड सकता है जिससे भारत में बाढ़ आने का गंभीर खतरा पैदा हो जायेगा।
- माउंट कैलाश से निकलने वाली 4 नदियां भी दोनों देशों के लिए एक बड़े विवाद की जड़ हैं। इसमें ब्रह्मपुत्र शामिल है। जहां चीन ने बांध बनाकर पानी को बाधित कर दिया है। इससे जल का बहाव प्रभावित है।

भारत के अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण

- भारत के रूस और अमेरिका दोनों के साथ ही अच्छे कूटनीतिक और सामरिक संबंध हैं। भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया क्वाड के सदस्य हैं । चीन ने कहा था कि क्वाड स्पष्ट तौर पर क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को निशाना बनाने का प्रयास है। उसने इसे बंद और विशिष्ट गुट बताया था। हालांकि अमेरिका ने कहा कि क्वाड एक 'अनौपचारिक सभा' है, जिसके निशाने पर कोई देश नहीं है।चीन को लगता है कि क्वाड(क्वाडिलैटरल सिक्योरिटी डॉयलॉग) के रूप में एशिया के भीतर नाटो जैसा समूह बना दिया गया है।
- दक्षिणी चीन सागर पर चीन का दृष्टिकोण आक्रामक और विस्तारवादी है जिसका भारत विरोध करता है।
- चीन भारत की अखंडता का समर्थन नहीं करता है परन्तु भारत से अपेक्षा करता है कि भारत एक चीन नीति का खुलकर समर्थन करे।
- चीन पूर्वोत्तर भारत में अस्थिरता फ़ैलाने का कार्य करता है और पाकिस्तान को भारत के खिलाफ गतिविधियों में सहयोग करता है । यही नहीं वह पाकिस्तान के आतंकवादियों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबन्ध लगाने के भारत के प्रयासों में अडंगा डालता है।
- चीन पीओके में अपनी कई परियोजनाएं चलाकर भारत की अखंडता का समर्थन करता है।

सहयोग की संभावनाएं

- चीन वर्तमान में भारतीय उत्पादों का बड़ा निर्यात बाजार है। वहीं चीन से भारत काफी आयात करता है और भारत, चीन के लिए उभरता हुआ बाज़ार है। चीन से भारत मुख्यतः इलेक्ट्रिक उपकरण, मेकेनिकल सामान, कार्बनिक रसायनों आदि का आयात करता है। वहीं भारत से चीन को मुख्य रूप से, खनिज ईंधन और कपास आदि का निर्यात किया जाता है।
- भारत में चीनी टेलिकॉम कंपनियाँ 1999 से ही हैं और वे काफी पैसा कमा रही हैं। इनसे भारत को भी लाभ हुआ है। भारत में चीनी मोबाइल का मार्केट भी बहुत बड़ा है।
- भारतीय सौर बाजार चीनी उत्पाद पर निर्भर है। भारत का थर्मल पावर चीन पर काफी निर्भर है। पावर सेक्टर के 70 से 80 फीसदी उत्पाद चीन से आते हैं। दवाओं के लिए कच्चे माल का आयात भी भारत चीन से ही करता है। इस मामले में भी भारत पूरी तरह से चीन पर निर्भर है।

सहयोग की संभावनाएं

भारत व चीन एशिया की उभरती ऐसी शक्तियाँ हैं जिनकी विदेश नीति का विश्व और एशिया की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इनके पारस्परिक सहयोग अथवा संघर्ष से न केवल एशियाई सुरक्षा परिवेश अपितु वैश्विक शक्ति संरचना पर भी प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। यदि भारत और चीन दोनों पड़ोसी देश इसी तरह टकराव और संघर्ष में आगे बढ़ेंगे तो एशियाई शताब्दी नहीं आएगी क्योंकि दोनों ही देश बड़ी अर्थव्यवस्था और बड़ा बाजार है। वहीं यदि दोनों के संबंधों में विश्वास और सद्भाव आता है तो यह शताब्दी एशिया की हो सकती है ।

मुकुंद माधव शर्मा

YOJNA IAS